उत्पन्न करने वाले थ्रिप्स प्रमुख नाशीजीव हैं। इन नाशीजीवों के विरूद्ध मेलाथियान तथा कार्बार्यल प्रभावी हैं। स्केलेरोटियम राल्फासी से होने वाला मुरझान रोग प्रमुख है। इसके नियंत्रण के लिए पौधे के आसपास कवकनाशकों जैसे कॉपर आक्सी क्लोराइड २% से मृदा का ड्रेंचिंग किया जाना चाहिए।

कटाई

मेज सजावट के लिए रंजनीगंधा फूलों के मूल से स्पाइक को काट लिया जाता है या फूल मालाओं तथा अन्य फूलों के सजावट के लिए इन्हें स्पाइक से तोड़ लिया जाता है। औसतन 15,000 से 20,000 कि.ग्रा. फूलों की उपज की आशा की जाती है।

पैकिंग

निर्यात के लिए फूलों को कोरूगेटेड बक्सों में पैक किया जाता है।

भा.कृ.अनु.प.-कें.द्वी.कृ.अनु.सं.
में रजनीगंधा के प्रायोगिक खेतों का दृश्य

भा.कृ.अनु.प.-कें.द्वी.कृ.अनु.सं. के प्रायोगिक खेत
में सुपारी के साथ रजनीगंधा का अन्तःफसल

पॉलीहाउस में रजनीगंधा की खेती

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
निदेशक
भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

Mahesh Graphics, Junglighat - 233521

रजनीगंधा की उत्पादन तकनीकी

वी. बास्करन, के. अबिरामी,
पी. सिम्हाचलम, यू. अबर्ना
एवं बी.ए. जेर्राड

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
पोर्ट ब्लेयर, पोस्ट बॉक्स नं. 181
अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह

संक्षिप्त परिचय एवं महत्व

रजनीगंधा एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फूलों की फसल है जिसे भारत सहित विश्व के अनेक उपोष्ण एवं उष्णकटिबंधीय भागों में व्यापक रूप से उगाया जाता है। यह एक बहुप्रयोजनीय फूलों का पौधा है जिसे विभिन्न प्रकारों एवं अवसरों पर उपयोग किया जाता है। इसके फूलों को खुले फूल, सजावटी फूल (कट फ्लावर) के लिए उपयोग किया जा सकता है। एकल पंखुड़ी वाले खुले फूलों को फूलमालाओं एवं फूलों की सजावट के लिए उपयोग किया जाता है जब कि दो पंखुड़ी वाले सजावटी फूलों का उपयोग बाउल, फूलदानी या पुष्पगुच्छ में उपयोग किया जाता है।

जलवायु एवं मृदा

रजनीगंधा की बेहतर वृद्धि एवं खुशबू के लिए तेज प्रकाश और उच्च तापमान की आवश्यकता होती है। रजनीगंधा सूर्य प्रकाश पसन्द पौधा है, अनुकूलतम वृद्धि एवं फूलों की उच्च उपज के लिए ऐसे स्थान का चयन किया जाता है जहां सूर्य प्रकाश प्रचुर मात्रा में हो। ग्रीष्मकाल के दौरान दोपहर के बाद के समय में थोड़ी छांव वांछनीय है। यदि अधिक छांव हो तो पौधे लम्बे पतले उगते हैं और पुष्पण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मृदा में अच्छी जल धारण क्षमता होनी चाहिए एवं जल निकासी महत्वपूर्ण है चूंकि अल्प अवधि के लिए भी जलभराव हो तो जड़ प्रणाली को क्षति पहुंचती है और वृद्धि एवं पुष्पण प्रभावित होती है। गमलों में उपयोग के लिए मिट्टी के दो भाग तथा लीफ माउल्ड एवं मोटी रेत का एक भाग मिलाया जाता है।

किस्में

पर्ल (डबल), डबल फूलों की अपेक्षा एकल फूलों के किस्म में अधिक खुशबू होती है। सिंगल मेक्सिकन, रजत रेखा, स्वर्ण रेखा, श्रृंगार, सुवासिनी, प्रज्वल, वैभव, फुले रजनी आदि।

प्रवर्धन

बल्बों का उपयोग किया जाता है। लगभग 1200 कि.ग्रा. बल्बों (1 से 1.5 लाख बल्ब/हे.) की आवश्यकता होती है।

रोपण

बल्बों का रोपण मेढ या ऊंची क्यारियों में 25 X 30 से.मी. की दूरी पर रोपण किया जाता है। अधिकतम फूल उत्पादन के लिए मई द्वीपों में जनवरी माह में रोपण उपयुक्त होता है।

सिंचाई प्रबंधन

नए पुष्पवृन्तों को प्रोत्साहित करने के लिए पूर्ण होने पर पुष्पण डंठल (फ्लावरिंग स्टाल्क) को काट दिया जाता है। फूलों के दाग के पूरा होने पर कटौती की जाती है। बल्बों को खेत में छोड़ दिया जाता है ताकि नई फसल उग सके। मौसमीय स्थितियों के अनुसार 5-10 दिनों में एक भारी सिंचाई की आवश्यकता होती है।

खाद एवं उर्वरक

एनपीके उर्वरक नाइट्रोजन : फास्फोरस पेंटाक्साइड : पोटाशियम 100:50:50 के अनुपात में सिफारिश की जाती है। इनमें से नाइट्रोजन का आधा भाग, फास्फोरस, तथा पोटाशियम का सम्पूर्ण भाग रोपण के दौरान दिया जाता है। शेष नाइट्रोजन का भाग जब फूलों के स्पाइक उगते हैं तब दिया जाता है।

पादप संरक्षण

पत्तियों को खाने वाले स्लग एवं टिड्डी (ग्रास हॉपर) तथा स्पाइक को क्षति पहुंचाने एवं विकृतियां